5.2 Difference between Dissolution of Partnership & Dissolution of Firm

साझेदारी के विघटन और फर्म के विघटन में अन्तर

अन्तर का आधार	*साझेदारी का विघटन*	*फर्म का विघटन*
1. संबंधों में परिवर्तन Change in Relation	साझेदारी के विघटन में सभी साझेदारों के बीच में चले आ रहे पूर्व के संबंधों में परिवर्तन का होना माना जाता है।	फर्म के विघटन में सभी साझेदारों के बीच संबंध पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं।
2. व्यवसाय का चालू रहना Continuance of Business	साझेदारी के विघटन की स्थिति में साझेदारी का पुनर्गठन कर व्यवसाय को आगे भी सुगमतापूर्वक चलाया जाता है।	फर्म के विघटन की स्थिति में व्यवसाय पूर्णतः समाप्त हो जाता है तथा सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों का बंटवारा सभी साझेदारों के बीच पूर्व निर्धारित अनुपात में कर दिया जाता है।
3. प्रभाव Effect	साझेदारी के विघटन पर यह अनिवार्य नहीं है कि फर्म का भी विघटन हो ही जाए।	परन्तु एक फर्म के विघटन पर साझेदारी का विघटन होना अनिवार्य हो जाता है।
4. लेखा पुस्तकों का बन्द होना Closure of Books of	साझेदारी के विघटन होने पर यह आवश्यक नहीं है कि लेखा पुस्तकों को बन्द कर दिया जाए, बल्कि	फर्म के विघटन की स्थिति में लेखा पुस्तकों को अनिवार्य रूप से बन्द कर दिया

Account	पुनर्गठित साझेदारों द्वारा उसी लेखा पुस्तक को चालू रखा जा सकता है या नयी लेखा पुस्तकों का संधारण किया जा सकता है।	जाता है।
5. प्रकृति Nature	साझेदारी का विघटन पूर्णतः साझेदारों की इच्छा पर आधारित होता है। यदि साझेदार आवश्यकता महसूस करते हैं तो साझेदारी का विघटन किया जा सकता है अन्यथा नहीं।	परन्तु फर्म का विघटन ऐच्छिक भी हो सकता है और अनिवार्य रूप से भी। साझेदारों की इच्छा होने पर ऐच्छिक विघटन होता है तथा फर्म के दिवालिया होने पर कानूनी रूप से अनिवार्य विघटन होता है।
6. न्यायालय का आदेश Court Order	साझेदारी का विघटन न्यायालय के आदेश से नहीं होता है बल्कि वर्तमान साझेदारों के इच्छा पर पुनर्गठन की प्रकिया के द्वारा होता है।	फर्म का विघटन दिवालिया की स्थिति में न्यायालय के आदेश पर अनिवार्य रूप से होता है।
7. सम्पत्तियों एवं दायित्वों का निपटारा Disposal of Assets and	साझेदारी के विघटन में सम्पत्तियों और दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है और साझेदारी के पुनर्गठन होने के बाद नया स्थिति	परन्तु एक फर्म के विघटन की स्थिति में सम्पत्तियों को बेचकर वसूली की जाती है तथा दायित्वों का

Liabilities	विवरण बनाया जाता है।	भुगतान कर उनका निपटारा किया जाता है।

****